माँ तुझे प्रणाम !

(देशभक्ती के गीत)

वंदे मातरम्

वंदे मातरम् !

सुजलाम् सुफलाम् मलयजशीतलाम्
सश्यश्यामलाम् मातरम् । वंदे मातरम् ।।

शुभ्रज्योत्स्ना पुलकित यामिनिम्
फुल्लकुसुमित द्रुमदल शोभिनीम्
सुहासिनीम् सुमधुरभाषिणिम्
सुखदाम् वरदाम् मातरम् ।। वंदे मातरम् !

कोटि कोटि कण्ठ कलकल निनाद कराले,
कोटि कोटि भुजैर्धृत खरकरवाले,
अबला केन मा एकबले बहुबलधारिणिम्
नमामि तारिणिम् रिपुदलवारिणिम् । मातरम् !
वंदे मातरम् !!

तुमि विद्या, तुमि धर्म, तुमि ह्रदि, तुमि मर्म
त्वं हि प्राणाः शरीरे, बाहुते तुमि मा शक्ति,
ह्रदये तुमि मा भक्ति, तोमारई प्रतिमा गडि मंदिरे ।
मातरम् ! वंदे मातरम् !!

त्वं हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी ।
कमला कमलदल विहारिणी । वाणी विद्यादायिनी,
नमामि त्वां । नमामि कमलाम्, अमलाम्, अतुलाम्
सुजलाम्, सुफलाम् मातरम् ।। वंदे मातरम् !!

श्यामलाम्, सरलाम्, सुस्मिताम्, भूषिताम्
धरणीम् भरणीम् मातरम् । वंदे मातरम् !!

- बंकिमचंद्र

माँ तुझे प्रणाम !

(देशभक्तीपर गीत)

सातम उद्योग™
www.satamudyogbooks.com

- ई-बुक आवृत्ती
- संकलन व संपादन : गुरुदास
- प्रकाशक : हेमंत स. साटम
- मुद्रक : साटम उद्योग
  २०३, अमित इंड. इस्टेट,
  लालबाग, मुंबई-४०० ०१२.
  ८१६९९ ८४९२७

अनुक्रम :

१. सारे जहाँ से अच्छा ६
२. झण्डा ऊँचा रहे हमारा ! ७
३. ऐ मेरे वतन के लोगो ९
४. देश हमारा ११
५. मंदीर ये हमारा १२
६. कदम कदम बढ़ाये जा १३
७. आओ बच्चों तुम्हे दिखाएँ १४
८. मेरे देश की धरती १६
९. हम होंगे कामयाब १७
१०. कर चले हम फिदा १८
११. ये देश है वीर जवानों का १९
१२. जहाँ डाल डाल पर २०
१३. ऐ मालिक तेरे बन्दे हम २१
१४. नन्हा मुन्ना राही २२
१५. छोडो कल की बातें २४
१६. ज्योत से ज्योत २६
१७. राष्ट्र यशगान २७
१८. धर्म तो एक ही सच्चा २८
१९. भारत को बदल कर मानेंगे ३०
२०. जागो भारत मां के लाल ३१
२१. हम बच्चे हिंदुस्थान के ३२
२२. कदम बढाओ ३३
२३. जय भारतवर्ष महान ३४
२४. जननी जन्मभूमि ३५
२५. दीप तू जलाता चल ३६
२६. जवान तू ३७
२७. हमारे जवान ३८
२८. संचलन गीत ३९
२९. इतनी शक्ती हमें देना दाता ४०
३०. कदम कदम बढ़ाये जा ४१
३१. हम लाए हैं तुफान से कश्ती निकाल के .. ४३
३२. दे दी हमें आजादी ४३
३३. सरफरोशी की तमन्ना ४५
३४. बिगुल बज रहा आजादी का ४६
३५. इन्साफ की डगर पे ४८

"जननि जन्मभूमीश्च स्वर्गादपि गरियसी ।"

संस्कृत भाषा का यह एक बहुत ही जाना पहचाना और अर्थपूर्ण सुभाषित है । माता और मातृभूमि की गरिमा स्वर्गप्राप्ती के सुख से कहीं ज्यादा महत्त्व रखती है । यह इस सुभाषित का गूढार्थ है, और यह गूढार्थ त्रिकाल सत्य है ।

जो मां की ममता न पा सका, मातृसुख से विमुख रहा हो, जो मातृभूमि के लिए तरसा हो, वह वाकई में बदनसीब, गरीब और दीन है, इसमें कोई शक नहीं, यही सर्वकालिन अनुभूति है ।

मातृभूमि के लिए देशप्रेमियों के मन में दृढ आस और असीम प्रेम होता है । इसलिए मातृभूमि की रक्षा में, कुशलता में, अखंडता के लिए आम देशप्रेमी एक योद्धा वीर की तरह अपने जान की बाजी लगा देता है । सारी कठिनाईयां, तकलिफें चूपचाप सह लेता है ।

हमारी मातृभूमि भारतमाता ब्रिटिश राज में गुलामी की जंजीरों से जकडी हुई थी, उसे मुक्त करने के लिए अनेकानेक देशप्रेमियों ने अपना तन-मन-धन न्यौछावर कर दिया । इसी समर्पण से मुक्त हुई मातृभूमि को सुरक्षित

रखने हेतु और राष्ट्र पर आई विपदाओं से सामना करने के लिए कई जवानों ने अपने प्राणों की बाजी लगा दी । दुश्मन से लढते हुए अपनी जान कुर्बान कर दी ।

मातृभूमि के लिए सारे देशप्रेमियों ने त्याग किया । महाराष्ट्र ने तो देश के लिए त्याग और बलिदान करने वाले देशप्रेमियों की एक समर्पित पीढी को जन्म दिया । मातृभूमि के लिए दिल में जो आदर और प्रेमभाव होता है वह बहुत असाधारण होता है । उसके आगे सब तुच्छ है । ऐसे प्रबल देशप्रेम का वर्णन कई प्रतिभावान कवियों ने कई भाषाओं में किया है । इन कविताओं द्वारा आम आदमी के मन में मातृभूमि की भक्ती को जगाए रखा है, देशप्रेम भाव को ऊँचाई तक पहुंचाया है । कुछ हिन्दी भाषा के मशहूर और भावपूर्ण देशभक्ती गीतों का संकलन एक छोटीसी किताब में प्रस्तुत है । इस संग्रह की कविताएं बच्चों से लेकर बड़ों तक सभी के लिए सदैव प्रेरणादायी रहेंगी, और हर देशप्रेमी के देशप्रेम की भावनाओं को आकाश की ऊँचाई तक ले जायेंगी, इस आशा के साथ ।

- गुरुदास